स्वविवेक को जगाने की कला

अशोक मानव

मानव मस्तिष्क प्रकृति का सुपर कम्प्यूटर है क्योंकि सबसे शक्तिशाली प्रकाश मन इसी के अन्दर क्रिया कर रहा है। इसे जगाने की सिर्फ एक आवश्यक शर्त है मन से शुद्ध विचार सोचे और मन को एक केन्द्र बिन्दु पर रोक सके।

ऐसा करके मानव महामानव बनकर हर घटना की जानकारी प्राप्त कर सकता हैं।

हर प्रकृति में अपनी प्रवृत्ति को सम कर लेने की अवस्था को समाधि कहते हैं इसका सही प्रयोग जागृत अवस्था में ही किया जा सकता है। मरने के बाद तो सभी समाधिस्थ हो जाते है।

जब वैचारिक लड़ाई विफल हो जाती है तो हिंसात्मक लड़ाई शुरू हो जाती है जो हमेशा चलती रहती है समय विशेष में हिंसात्मक लड़ाई भयंकर रूप ले लेती है जिसे महायुद्ध के नाम से जाना जाता है जिसमें अत्यधिक मानव विनष्ट हो जाता है, पर आने वाले समय में विचारों का युद्ध शुरू होगा जिसमें विजय शुद्ध भावना को मिलेगी इस युद्ध में अशुद्ध भावना परास्त होगी।

जिसके परिणाम स्वरूप मानवता का विकास होगा यही युद्ध प्रकृति का सच्चा युद्ध होगा। जिसकी सुगन्ध से प्रकृति प्रदूषण विहीन हो जायेगी।

हर व्यक्ति अपना गुरू स्वयं है। सबसे बड़ा न्यायी उसका मन होता है जो हर क्रिया का सत्य असत्य बताता है। उसी से पूछ कर हर विषय का निर्णय लेना चाहिए। अन्य व्यक्ति आप को सलाह आपके हित को नहीं बल्कि हो सकता है कि अपने हित को देखते हुए दे।

किसी के कहने का प्रभाव व्यक्ति पर तभी पड़ता है जब वह वैसा सोचने लगता है। यदि वैसा न सोचे तो उसके ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि एक ही तरह की वस्तु कई खाते हैं पर इच्छाशक्ति के कारण सभी के गुण अलग बनते हैं।

मन जैसा सोचता है उस तरह की ऊर्जा उसके शरीर से निकलती है जो विषय को पूरा करने के लिए जीवाणु पैदा करती है। जिसके लिए ऊर्जा छोड़ी जाती है उसके अन्दर भी उसी तरह के विचार बनने लगते हैं।

मानव मस्तिष्क प्रकृति का सुपर कम्प्यूटर है क्योंकि सबसे शक्तिशाली प्रकाश मन इसी के अन्दर क्रियाशील रहा है। इसे जगाने का सिर्फ एक आवश्यक शर्त है मन से शुद्ध विचार सोचें और मन को एक केन्द्र बिन्दु पर रोक सकें।"

आत्मा सूर्य की वह संरचना है जिसे जल का गसीय भाग रोकता है इसी को मन कहते हैं यह इच्छाशक्ति को जनम देता है यदि इसे एक बिन्दु पर रोकने का अभ्यास किया जाता है तो इसी प्रकार का एक प्रकाश प्रकृति में उसके लिए बन जाता है जिसे वह हमेशा देख सकता है वही प्रकाश उसका सच्चा मित्र होता है इसकी क्षमता इच्छाशक्ति से भूत भविष्य वर्तमान अर्थात् सब कुछ जानने की क्षमता होती है। इसका प्रयोग हर व्यक्ति कर सकता है आप किसी प्रश्न की जानकारी के लिए मन को रोक दीजिए 5 मिनट बाद आपको जवाब मिलेगा वही सत्य होगा।

"शब्द और दूसरे कर्म का प्रभाव आत्मसम्मान को कभी नहीं भेद सकता हैं आत्मसम्मान की रक्षा सिर्फ नैतिक कर्म ही कर सकता है।"

"प्रकृति में होने वाली घटना के दृश्य से शरीर उत्तेजित न हो, मन पर अपना एकाधिकार हो मन वही सोचे जो उसकी इच्छाशक्ति चाहती है अथवा शान्त रहे यही अवस्था मानव जीवन के लिए हर प्रकृति में सम कहलाती है। अपनी इच्छाशक्ति रूपी जादुई छड़ी से व्यक्ति मानव समाज में इच्छानुसार प्रवृत्ति का विकास कर सकता है।"

"भूत भूल जाओ क्योंकि उसे बदल नहीं सकते वर्तमान जगा लो भविष्य उज्ज्वल हो जायेगा।"